रहस्य संदेश

RNI. NO. UPHIN/2007/20715

95, लखनऊ एंव एटा से प्रकाशित, शुकवार, 07 अप्रैल, 2023 पृष्ठ: 8

कृषकों ने देखा प्राकृतिक विधि से गेहूं की फसल

(अनवर अशरफ) कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के प्रक्षेत्र पर लगे गौ आधारित प्राकृतिक खेती के गेहूं के परीक्षण को जनपद फर्रुखाबाद के किसानों के दल ने स्वयं आकर देखा। इस अवसर पर केंद्र के प्रभारी डॉ एके सिंह ने किसानों का स्वागत करते हुए कहा कि आज प्राकृतिक खेती की आवश्यकता है क्योंकि रसायनों के अधिकाधिक प्रयोग से मानव ,मृदा तथा पर्यावरण स्वास्थ्य निरंतर खराब होता जा रहा है।उन्होंने किसानों को सलाह दी कि कम से कम क्षेत्रफल पर ही सही लेकिन गौआधारित प्राकृतिक खेती अवश्य अपनाएं। जिससे मृदा स्वास्थ्य के साथ ही मानव स्वास्थ्य भी सही रहे। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को नीमस्त्र, ब्रह्मास्त्र, जीवामृत, वीजामृत आदि के बनाने की वैज्ञानिक तकनीकी को समझाया। उन्होंने कहा कि इन खादों में पौधों के लिए आवश्यक सभी 17 पोषक तत्व उपलब्ध रहते हैं। जिससे किसानों की कृषि लागत में कमी आती है उत्पादन बढ़ता है। इस अवसर पर किसानों ने प्राकृतिक विधि से उत्पादित गेहूं की फसल को भी देखा। इस अवसर पर पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने प्राकृतिक खेती में पशुओं के योगदान विषय पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने केंद्र पर लगी मत्स्य तकनीकी इकाई को भी किसानों को दिखाया। किसानों का नेतृत्व कर रहे श्री पथिक सिंह चौहान ने बताया कि यह सभी किसान जनपद फर्रुखाबाद के कमालगंज विकास क्षेत्र से हैं। प्रक्षेत्र पर आकर प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। इस अवसर पर डॉक्टर निमिषा अवस्थी, डॉक्टर राजेश राय सहित अन्य वैज्ञानिकों ने भी जानकारी दी। फर्रुखाबाद के 60 से अधिक किसानों के दल ने कृषि विज्ञान केंद्र पर लगे गौआधारित प्राकृतिक खेती का अवलोकन कर जानकारी प्राप्त की।

वर्ष-17 अंक-94 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, शुक्रवार 07 अप्रैल 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फरीदपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक
नगर छाया
आप की आवाज़.....

कृषकों ने देखा प्राकृतिक विधि से गेहूं की फसल का परीक्षण

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के प्रक्षेत्र पर लगे गौ आधारित प्राकृतिक खेती के गेहूं के परीक्षण को जनपद फर्रुखाबाद के किसानों के दल ने स्वयं आकर देखा। इस अवसर पर केंद्र के प्रभारी डॉ एके सिंह ने किसानों का स्वागत करते हुए कहा कि आज प्राकृतिक खेती की आवश्यकता है क्योंकि रसायनों के अधिकाधिक प्रयोग से मानव ,मृदा तथा पर्यावरण स्वास्थ्य निरंतर खराब होता जा रहा है।उन्होंने किसानों को सलाह दी कि कम से कम क्षेत्रफल पर ही सही लेकिन गौआधारित प्राकृतिक खेती अवश्य अपनाएं। जिससे मृदा स्वास्थ्य के साथ ही मानव स्वास्थ्य भी सही रहे। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को नीमस्त्र, ब्रह्मास्त्र, जीवामृत, वीजामृत आदि के बनाने की वैज्ञानिक तकनीकी को समझाया। उन्होंने कहा कि इन खादों में पौधों के लिए आवश्यक सभी 17 पोषक तत्व उपलब्ध रहते हैं। जिससे किसानों की कृषि लागत में कमी आती है उत्पादन बढ़ता है। इस अवसर पर किसानों ने प्राकृतिक विधि से उत्पादित गेहूं की फसल को भी देखा। इस अवसर पर पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने प्राकृतिक खेती में पशुओं के योगदान विषय पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने केंद्र पर लगी मत्स्य तकनीकी इकाई को भी किसानों को दिखाया। किसानों का नेतृत्व कर रहे श्री पथिक सिंह चौहान ने बताया कि यह सभी किसान जनपद फर्रुखाबाद के कमालगंज विकास क्षेत्र से हैं। प्रक्षेत्र पर आकर प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। इस अवसर पर डॉक्टर निमिषा अवस्थी, डॉक्टर राजेश राय सहित अन्य वैज्ञानिकों ने भी जानकारी दी। फर्रुखाबाद के 60 से अधिक किसानों के दल ने कृषि विज्ञान केंद्र पर लगे गौआधारित प्राकृतिक खेती का अवलोकन कर जानकारी प्राप्त की।

कृषकों ने देखा प्राकृतिक विधि से गेहूं की फसल

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के प्रक्षेत्र पर लगे गौ आधारित प्राकृतिक खेती के गेहूं के परीक्षण को जनपद फर्रुखाबाद के किसानों के दल ने स्वयं आकर देखा। इस अवसर पर केंद्र के प्रभारी डॉ एके सिंह ने किसानों का स्वागत करते हुए कहा कि आज प्राकृतिक खेती की आवश्यकता है क्योंकि रसायनों के

अधिकाधिक प्रयोग से मानव ,मृदा तथा पर्यावरण स्वास्थ्य निरंतर खराब होता जा रहा है।उन्होंने किसानों को सलाह दी कि कम से कम क्षेत्रफल पर ही सही लेकिन गौआधारित प्राकृतिक खेती अवश्य अपनाएं। जिससे मृदा स्वास्थ्य के साथ ही मानव स्वास्थ्य भी सही रहे। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को नीमस्त्र, ब्रह्मास्त्र, जीवामृत, बीजामृत आदि के बनाने की वैज्ञानिक तकनीकी को समझाया। उन्होंने कहा कि इन खादों में पौधों के लिए आवश्यक सभी 17 पोषक तत्व उपलब्ध रहते हैं। जिससे किसानों की कृषि लागत में कमी आती है उत्पादन बढ़ता है। इस अवसर पर किसानों ने प्राकृतिक विधि से उत्पादित गेहूं की फसल को भी देखा। इस अवसर पर पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने प्राकृतिक खेती में पशुओं के योगदान विषय पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने केंद्र पर लगी मत्स्य तकनीकी इकाई को भी किसानों को दिखाया।किसानों का नेतृत्व कर रहे पथिक सिंह चौहान ने बताया कि यह सभी किसान जनपद फर्रुखाबाद के कमालगंज विकास क्षेत्र से हैं। प्रक्षेत्र पर आकर प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। इस अवसर पर डॉक्टर निमिषा अवस्थी, डॉक्टर राजेश राय सहित अन्य वैज्ञानिकों ने भी जानकारी दी। फर्रुखाबाद के 60 से अधिक किसानों के दल ने कृषि विज्ञान केंद्र पर लगे गौआधारित प्राकृतिक खेती का अवलोकन कर जानकारी प्राप्त की।

उत्तराखंड,मध्य-प्रदेश,उत्तर-प्रदेश,राजस्थान,बिहार,महाराष्ट्र,गुजरात,संघ प्रदेश,से एक साथ प्रसारित

RNI NO - UTTHIN/2018/76731

हिन्दी दैनिक

गांव देहात की खबर,शहर पर भी नजर

दि ग्राम टुडे

सूर्योदय: 06:10 बजे

सूर्यास्त: 05:45 बजे

शुक्रवार, , 07 अप्रैल 2023

वर्ष: 05 अंक: 250

पेज: 08, मूल्य: 2 रूपये

Email : thegramtodayeditor@gmail.com

कृषकों ने देखा प्राकृतिक विधि से गेहूं की फसल

दि ग्राम टुडे, कानपुर।

(सत्येंद्र कुमार) चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के प्रक्षेत्र पर लगे गौ आधारित प्राकृतिक खेती के गेहूं के परीक्षण को जनपद फरुर्खाबाद के किसानों के दल ने स्वयं आकर देखा। इस अवसर पर केंद्र के प्रभारी डॉ एके सिंह ने किसानों का स्वागत करते हुए कहा कि आज प्राकृतिक खेती की आवश्यकता है क्योंकि रसायनों के अधिकाधिक प्रयोग से मानव ,मृदा तथा पर्यावरण स्वास्थ्य निरंतर खराब होता जा रहा है।उन्होंने किसानों को सलाह दी कि कम से कम क्षेत्रफल पर ही सही लेकिन गौआधारित प्राकृतिक खेती अवश्य अपनाएं। जिससे मृदा स्वास्थ्य के साथ ही मानव स्वास्थ्य भी सही रहे। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को नीमस्त्र, ब्रह्मास्त्र, जीवामृत, वीजामृत आदि के बनाने की वैज्ञानिक तकनीकी को समझाया। उन्होंने कहा कि इन खादों में पौधों के लिए आवश्यक सभी 17 पोषक तत्व उपलब्ध रहते हैं। जिससे किसानों की कृषि लागत में कमी आती है उत्पादन बढ़ता है। इस अवसर पर किसानों ने प्राकृतिक विधि से उत्पादित गेहूं की फसल को भी देखा। इस अवसर पर पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने प्राकृतिक खेती में पशुओं के योगदान विषय पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने केंद्र पर लगी मत्स्य तकनीकी इकाई को भी किसानों को दिखाया। किसानों का नेतृत्व कर रहे श्री पथिक सिंह चौहान ने बताया कि यह सभी किसान जनपद फरुर्खाबाद के कमालगंज विकास क्षेत्र से हैं। प्रक्षेत्र पर आकर प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। इस अवसर पर डॉक्टर निमिषा अवस्थी, डॉक्टर राजेश राय सहित अन्य वैज्ञानिकों ने भी जानकारी दी। फरुर्खाबाद के 60 से अधिक किसानों के दल ने कृषि विज्ञान केंद्र पर लगे गौआधारित प्राकृतिक खेती का अवलोकन कर जानकारी प्राप्त की।

गेहूं फसल की कटाई मड़ाई करते समय रखें विशेष सावधानियां : डॉ. आरके सिंह

भारत कनेक्ट संवाददाता

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. बिजेंद्र सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज शोध निदेशालय के वैज्ञानिक डॉक्टर आर के सिंह ने एडवाइजरी जारी कर कहा है। कि किसान भाई अपने खेतों पर कार्य करने वाले लोगों के लिए सुरक्षात्मक कदम उठाते हुए फसलों की कटाई एवं मड़ाई इत्यादि कार्य संपन्न करें। उन्होंने कहा है कि गेहूं या सरसों की फसल काटते समय अपना मुंह मास्क या अंगोछे से ढक कर रखें। डॉक्टर भानु ने बताया कि किसान भाई कंबाइन मशीन, रीपर या अन्य यंत्रों जैसे हसिया द्वारा गेहूं की कटाई करते हैं कृषि यंत्रों के प्रयोग करते समय कभी-कभी चिंगारियां निकलती है या फसल कटाई करने वाले

लोगों द्वारा धूम्रपान का प्रयोग किया जाता है। जिसकी चिंगारी से फसल जलकर राख हो सकती है ऐसे समय में किसान भाई सावधानी बरतें की कोई धूम्रपान न करने पाए किसान भाइयों के पास फसल मड़ाई करते समय अनुपयोगी जूट के बोरे आदि को पूर्ण रूप से पानी में डुबोकर थ्रेशिंग कार्य करते समय आसपास जरूर रखें। जिससे आग लगने की दशा में गीले बोरों को डालकर आग बुझाया जा सके। तथा बड़ी दुर्घटना से बचा जा सके। मड़ाई यंत्र को समतल दशा में स्थापित करें तथा थ्रेसर में लगाई गई सुरक्षा तंत्रों को न हटाए। डॉ सिंह ने किसान भाइयों को यह भी एडवाइजरी दी है की थ्रेसर पर कार्य करते समय शरीर पर ढीले कपड़े, घड़ी, कड़ा इत्यादि पहनकर कार्य न करें। विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्रा ने बताया कि फसल थ्रेसर में लगाते समय हाथ को उचित दूरी पर ही रखें तथा थ्रेशिंग कार्य करते समय आपस में बातें न करें। इस समय चौकस रहने की आवश्यकता होती है। डॉक्टर मिश्रा ने कहा कि थ्रेसर में किसी प्रकार का समायोजन तभी करें जब इंजन या मोटर बंद हो।थ्रेसर को चलाने के पूर्व यह सुनिश्चित कर ले की थ्रेसर की सभी घूमने वाली वस्तुएं बिना रुकावट के घूम रही हो। किसान भाई इन सब बातों को ध्यान में रखकर फसल की कटाई एवं मड़ाई का कार्य संपादित करें।

र्ष-17 अंक-95 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, शनिवार 08 अप्रैल 2023

नपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

गेहूं फसल की कटाई व मड़ाई करते समय रखें विशेष सावधानियां: डॉ. आर.के. सिंह

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. बिजेंद्र सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज शोध निदेशालय के वैज्ञानिक डॉक्टर आर के सिंह ने एडवाइजरी जारी कर कहा है कि किसान भाई अपने खेतों पर कार्य करने वाले लोगों के लिए सुरक्षात्मक कदम उठाते हुए फसलों की कटाई एवं मड़ाई इत्यादि कार्य संपन्न करें। उन्होंने कहा है कि गेहूं या सरसों की फसल काटते समय अपना मुंह मास्क या अंगोछे से ढक कर रखें। डॉक्टर भानु ने बताया कि किसान भाई कंबाइन मशीन, रीपर या अन्य यंत्रों जैसे हसिया द्वारा गेहूं की कटाई करते हैं कृषि यंत्रों के प्रयोग करते समय कभी-कभी चिंगारियां निकलती है या फसल कटाई करने वाले लोगों द्वारा धूमपान का प्रयोग किया जाता है ।जिसकी चिंगारी से फसल जलकर राख हो सकती है ऐसे समय में किसान भाई सावधानी बरतें की कोई धूमपान न करने पाए किसान भाइयों के पास फसल मड़ाई करते समय अनुपयोगी जूट के बोरे आदि को पूर्ण रूप से पानी में डुबोकर थेरिंग कार्य करते समय आसपास जरूर रखें। जिससे आग लगने की दशा में गीले बोरों को डालकर आग बुझाया जा सके। तथा बड़ी दुर्घटना से बचा जा सके। मड़ाई यंत्र को समतल दशा में स्थापित करें तथा थेसर में लगाई गई सुरक्षा तंत्रों को न हटाए । डॉ सिंह ने किसान भाइयों को यह भी एडवाइजरी दी है की थेसर पर कार्य करते समय शरीर पर ढीले कपड़े, घड़ी, कड़ा इत्यादि पहनकर कार्य न करें। विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्रा ने बताया कि फसल थेसर में लगाते समय हाथ को उचित दूरी पर ही रखें तथा थेरिंग कार्य करते समय आपस में बातें न करें। इस समय चौकस रहने की आवश्यकता होती है। डॉक्टर मिश्रा ने कहा कि थेसर में किसी प्रकार का समायोजन तभी करें जब इंजन या मोटर बंद हो।थेसर को चलाने के पूर्व यह सुनिश्चित कर ले की थेसर की सभी घूमने वाली वस्तुएं बिना रुकावट के घूम रही हो। किसान भाई इन सब बातों को ध्यान में रखकर फसल की कटाई एवं मड़ाई का कार्य संपादित करें।

शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष : 7, अंक : 312 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, शुक्रवार
07 अप्रैल, 2023
मूल्य ₹ 3.00

www.shashwattimes.com

सिद्धगंधर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि। सेव्यमाना यदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायनी।।

कृषकों ने देखा प्राकृतिक विधि से गेहूं की फसल

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के प्रक्षेत्र पर लगे गौ आधारित प्राकृतिक खेती के गेहूं के परीक्षण को जनपद फर्रुखाबाद के किसानों के दल ने स्वयं आकर देखा। इस अवसर पर केंद्र के प्रभारी डॉ एके सिंह ने किसानों का स्वागत करते हुए कहा कि आज प्राकृतिक खेती की आवश्यकता है क्योंकि रसायनों के अधिकाधिक प्रयोग से मानव ,मृदा तथा पर्यावरण स्वास्थ्य निरंतर खराब होता जा रहा है।उन्होंने किसानों को सलाह दी कि कम से कम क्षेत्रफल पर ही सही लेकिन गौआधारित प्राकृतिक खेती

अवश्य अपनाएं। जिससे मृदा स्वास्थ्य के साथ ही मानव स्वास्थ्य भी सही रहे। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को नीमस्त्र, ब्रह्मास्त्र, जीवामृत, वीजामृत आदि के बनाने की वैज्ञानिक तकनीकी को समझाया। उन्होंने कहा कि इन खादों में पौधों के लिए आवश्यक सभी 17 पोषक तत्व उपलब्ध रहते हैं। जिससे किसानों की कृषि लागत में कमी आती है उत्पादन बढ़ता है। इस अवसर पर किसानों ने प्राकृतिक विधि से उत्पादित गेहूं की फसल को भी देखा। इस अवसर पर पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने प्राकृतिक खेती में पशुओं के योगदान विषय पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने केंद्र पर लगी मत्स्य तकनीकी इकाई को भी किसानों को दिखाया। किसानों का नेतृत्व कर रहे श्री पथिक सिंह चौहान ने बताया कि यह सभी किसान जनपद फर्रुखाबाद के कमालगंज विकास क्षेत्र से हैं। प्रक्षेत्र पर आकर प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। इस अवसर पर डॉक्टर निमिषा अवस्थी, डॉक्टर राजेश राय सहित अन्य वैज्ञानिकों ने भी जानकारी दी। फर्रुखाबाद के 60 से अधिक किसानों के दल ने कृषि विज्ञान केंद्र पर लगे गौआधारित प्राकृतिक खेती का अवलोकन कर जानकारी प्राप्त की।